जन संपर्क एवं मीडिया समन्वयक कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति 04 मार्च 2020

जामिया टीचर्स एसोसिएशन ने दंगों में भारतीय जीवन की क्षति पर शोक व्यक्त किया; दंगों से प्रभावित बच्चों की स्नातक तक शिक्षा और गरीबों के पुनर्वास के लिए अपने वेतन में से योगदान देने का संकल्प किया

जामिया टीचर्स एसोसिएशन (जेटीए) ने मंगलवार, 3 मार्च, 2020 को डॉ. एम. ए. अंसारी सभागार में एक आपातकालीन जनरल बॉडी मीटिंग (जीबीएम) का आयोजन किया। इसका एजेंडा, दिल्ली सांप्रदायिक दंगों के पीड़ितों की मदद और मृतकों के प्रति सामूहिक संवेदना प्रकट करना था। 29 फरवरी, 2020 को, जेटीए ने जामिया शिक्षकों का प्रतिनिधिमंडल सहायता वितरित करने के लिए दंगा प्रभावित इलाकों में भेजा था। प्रतिनिधिमंडल ने जीबीएम में अपनी रिपोर्ट पेश की और दंगा पीड़ितों की व्यथा सुनाई। उन्होंने कहा कि मुस्तफाबाद इलाके का दौरा करते समय महिलाओं, बच्चों और अन्य द्वारा उठाई जा रही पीढ़ा को बयान करना मुश्किल है। जेटीए ने राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं के लिए सांप्रदायिक दंगों को भड़काने वालों की सर्वसम्मति से निंदा की। इसमें कहा गया कि गया कि प्रत्येक भारतीय नागरिक का जीवन, शिक्षकों के लिए मायने रखता है और दंगों में हूए नुकसानों का आकलन केवल प्रभावित लोगों की संख्या या मुद्रा में बता कर नहीं किया जा सकता है। धार्मिक समुदायों के बीच भाईचारा और स्नेह सबसे कीमती है और परिवार के सदस्यों की हानि शब्दों में बयान नहीं की जा सकती है। प्रतिनिधिमंडल ने यह भी कहा कि दंगा प्रभावित क्षेत्रों में लोगों ने सरकार और प्रशासन में विश्वास खो दिया है। धार्मिक समुदायों के बीच एकता और प्रेम भाव भारतीयों के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। जामिया के शिक्षकों ने कहा कि यह वह समय है जब हम आम भारतीय एकजुट होकर धार्मिक विविधता को बचाने के लिए, नफरत फैलाने वालों के खिलाफ संघर्ष करें।

बैठक में शिक्षकों ने कई सुझाव रखे:

* प्रत्येक शिक्षक द्वारा, न्यूनतम, एक दिन के वेतन का योगदान।
* सभी धर्मो के दंगा पीड़ितों तक पहूँचना और उनकी मदद करना।
* कोष निर्माण और उसके उपयोग के लिए कानूनी तंत्र बनाना।
* दंगा पीड़ितों की मदद के लिए बचत करने के इरादे से, एक वर्ष के लिए कोई भव्य खरीद नहीं

की जाए और केवल मूल और ज़रूरी खर्च की नीति पर चलें।

* दंगा प्रभावित क्षेत्र में नष्ट हुए स्कूलों को फिर से बनाने / पुनर्जीवित करने में मदद करना। दंगा पीड़ितों की शिक्षा के लिए उनकी स्नातक तक की पढ़ाई में सहायता करना।

* गरीब विक्रेताओं की पुनर्वास के प्रयासों में मदद करना।

अहमद अज़ीम

जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया संयोजक